[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3453

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय और पाश्चात्य संगीत में नवाचार विषयक पारस्परिकता

शशिकला दुबे
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय किला मैदान, इन्दौर

वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर प्रायः हर क्षेत्र में नवाचार के बढ़ते कदम परिलक्षित हो रहे हैं। संगीत के क्षेत्र में नवाचार को लेकर नवीन प्रयोग हो रहे हैं, जिससे संगीत विषयक विभिन्न धारणाओं को जीवन्त गति मिल रही है।

एक समय ऐसा भी था कि जब भारतीय और पाश्चात्य संगीत के मध्य भेद को लेकर कहा जाता था कि भारतीय संगीत को सुनने वाले श्रोताओं के सिर हिला करते हैं जबकि पाश्चात्य संगीत को सुनने वालों के पैर हिला करते हैं। संगीत के पारखी सुधीजनों के बीच आज भी यही मान्यता स्थिर है। लेकिन प्रयोग की दृष्टि से संयुक्त सृजनात्मकता अपनी बात को मनवा ही लेती है। संगीत में आये नवाचार ने भी पारम्परिक श्रोताओं के मस्तिष्क पर दस्तकें दी हैं, फलस्वरूप नवाचार के कारण संगीत के आधुनिक स्वरूप के प्रति भी संगीत के पारस्परिक श्रोताओं का रागात्मक संवेदन जागा है।

सजातीय आकर्षण की तुलना में विजातीय आकर्षण का बोध सदैव से ही लुभाता रहा है। लेकिन संगीत के प्रति आकर्षण का कारण रूप नहीं अपितु गुण है। गुण ही संगीत की आत्मा है और संगीत को उसके गुणों के साथ समझने वालों के लिए मोक्ष का साधन है। परंतु संगीत में यदि गुणवत्ता की उपज अन्य किसी देश के संगीत के अनुकरण के फलस्वरूप पैदा होती है, तो इससे संगीत की खेती में खरपतवार का उगना जय है। आज पाश्चात्य देशों में संगीत की दुनिया में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की उपयोगी उपलब्धता बढ़ी है। पाश्चात्य देशों में इलेक्ट्रॉनिक गिटार संगीत का अभिन्न अंग बन चुकी है। नवाचार के नाम पर संगीत के अभिनव प्रयोग इसी गिटार के मार्फत विश्व–विश्रुत होता जा रहा है। इस नाते इलेक्ट्रॉनिक गिटार का प्रचलन भारतीय संगीत में भी अपने पैर जमाये हुआ दिखाई पड़ रहा है। यहाँ मोटी बात यह है कि पाश्चात्य देशों में संगीत में नित नए प्रयोग करने वाले संगीतकारों के समानांतर ऐसे श्रोताओं का बाहुल्य है जिनमें संगीत के प्रति जन्मजात समझ है अथवा फिर वहाँ के श्रोता स्वयं में गुणात्मक रूचियाँ सोद्देश्यमूलक विचारों के बल पर पैदा कर संगीत की अनुभूति की तीव्रता के अधीन होते चले जाते है। अतएव पाश्चात्य देशों में संगीत में हो रहे नवाचार वहाँ के श्रोताओं की मांगों के अनुरूप क्रियाशील होते है। इसी कारण पाश्चात्य देशों में नवाचारों के प्रति समझ और सहमति तत्परता के साथ देखने को मिलती है।

भारतीय संगीत का रूप, भारतीय संगीत के गुण और भारतीय संगीत की जाति अलग–अलग खेमों से उतर कर व्यापक वैविध्य के साथ दृष्टिगोचर होती है। यहाँ रवीन्द्र संगीत, उत्तरप्रदेश और बिहार का संगीत, कर्नाटक संगीत अपनी–अपनी विशेषताओं के आधार पर लोकानुरंजन के केन्द्र बने हुए है। भारतीय संगीत की अस्मिता संगीत के इन विविध घरानों से पायदार है। अतएव संगीत के क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीयता की पहचान यहाँ की भाषायी विविधता की तरह है। हालांकि यह बात अवश्य है कि गुणी संगीतकारों ने भारतीय संगीत के अलग–अलग घाट पर अपनी अपनी तरह से नवाचारों के पोत बांधे है लेकिन फिर एकाग्र दृष्टि से भारतीय संगीत में आ रहे नवाचारों का अध्ययन मुमकिन नहीं तो भी दुरूह अवश्य है।

एक समय था जब भारतीय संगीत अपनी समस्त वैविध्यता के उपरांत भी विश्व स्तर पर लोकप्रिय रहा है। भारतीय संगीत की सुरीले धुनें, कोरनाल, भूगल, शंख, इसराज, सारंगी, बाँसुरी, तबला और ढोलक के बल पर मुखरित होकर रसास्वादकों को संगीत के साथ तादात्म्य की मधुमति भूमिका में उतार दिया करती थी। भारतीय लोक धुनों से अनुप्राणित होकर भारतीय संगीत की आत्मा शान्त सरोवर में तैरते राजहँसों सी प्रतीत होती थी लेकिन ऐसा नहीं कि वर्तमान में भारतीय संगीत का पारम्परिक मौसम बदल गया हैं। भारतीय संगीत का पुराना और प्रीतिकर वैभव आज भी सिर पर चढ़कर बोलता है। लेकिन भारतीय संगीत के श्रोताओं की ओर से भारतीय संगीतकारों को कुछ नया कर दिखाने की चुनौतियाँ उस पैमाने पर नहीं मिल पा रही है जिस तादात में पाश्चात्य संगीतकारों को वहाँ के सुनने वालों की ओर से संगीत में नवाचार पैदा करने की और–और चुनौतियाँ मिल रही है।

एक बात और, पाश्चात्य देशों में संगीत के क्षेत्र में अपनाया जाने वाला इलेक्ट्रॉनिक गिटार आज संगीत के नानाविध वाद्ययन्त्रों का पर्याय बन चुका है। कोई महफिल, कोई मजमा इलेक्ट्रॉनिक गिटार से स्फुरित धुनों के बगैर नीरस है। अतएव भारतीय संगीतकारों ने भी इलेक्ट्रॉनिक गिटार को अपना संगीत सजाने का माध्यम बना लिया है। अब वैश्विक संगीत में इलेक्ट्रॉनिक

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

गिटार ही सर्वाधिक रूप में सबके लिए सबका पसन्दीदा उपकरण बन गया है। आज कल पाश्चात्य देशों में ही नहीं प्रत्युत भारतीय नई पीढ़ी में भी गिटार का प्रचलन बढ़ रहा है।

भारत की नई पीढ़ी की बात करें तो, भारत से प्रति वर्ष कोई अस्सी हज़ार युवा विदेशों में पहुँच रहा है। इस नाते भारत में मानव संसाधन की दृष्टि से युवाओं की भरमार अधिक है। आज के भारत का बहुतायत युवा वर्ग संगीत का शौकीन होता जा रहा है। इस वर्ग में इलेक्ट्रॉनिक गिटार सर्वाधिक प्रिय बनती जा रही है। इस नाते यदि हम देखें तो पायेंगे कि आज का युवा भारतीय संगीत से दूर और पाश्चात्य संगीत के समीप पहुँच रहा है। फलतः भारतीय संगीत में नवाचार का प्रश्न केवल कुछेक भारतीयों के मध्य मे ही रह गया है। अलबत्ता, पाश्चात्य देशों में भी भारतीय संगीते की दरकार है। लेकिन पश्चिमी देशों में भारतीय संगीत को सिखाने वाले संगीतकार अधिकांश रूप में दक्षिण भारत से है। भारत के हिन्दी भाषी क्षेत्रों के संगीतकारों की माँग विदेशों में हैं, लेकिन दुर्भाग्य कि वहाँ इनकी पूर्ति नहीं हो पा रही है। अतएव विदेशों में बसे भारतीय समुदाय के लोगों के मध्य पाश्चात्य संगीत की तुलना में भारतीय संगीत के प्रति रागात्मक आस्था घट रही है।